आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 8 अंक : 07 मार्च, 2021 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

पशुपालन के क्षेत्र में मूल्य संवर्द्धन उत्पाद व प्रसंस्करण समय की आवश्यकता

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों–बहनों

राम–राम सा।

पशुपालन क्षेत्र में खाद्य प्रसंस्करण और उद्यमिता विकास के अनेकों अवसर सुलभ हैं। यदि किसान और पशुपालकों को अपनी आय बढ़ानी है तो पशुधन उत्पादों का प्रसंस्करण किया जाना जरूरी है। डेयरी से दुग्ध एवं दुग्ध निर्मित उत्पाद, भेड़–बकरी और मुर्गी पालन और मत्स्य उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है। भारत के लोगों की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने से वे उत्कृष्ट गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थो पर खर्च करने की स्थिति में है। किसान और पशुपालक अपनी लागत पूंजी और मेहनत से पशुधन उत्पादों को प्रसंस्करण स्वरूप में उपभोक्ता तक पहुंचाने से अपनी आय में अभूतपूर्व वृद्धि कर सकते हैं। भारत दुग्ध एवं दुग्ध निर्मित उत्पादों में विश्व के शीर्षस्थ देशों में तथा मत्स्य उत्पादों में अग्रणी देशों में शामिल हैं। कृषि के बदलते परिदृश्य में किसान और पशुपालकों की समृद्धि के लिए इस दिशा में प्रशिक्षणों की आवश्यकता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन तथा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत पशुपालन में कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन समय–समय पर किया जाता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के वित्तीय सहयोग से विश्वविद्यालय में कौशल विकास केन्द्र स्थापित किया जा रहा है। यहां किसान और पशुपालकों को पशुपालन क्षेत्र में उद्यमिता विकास के लिए प्रशिक्षित किए जाने की सुविधा मिलेगी। अभी हाल ही में विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय ग्रामीण कृषि विकास बैंक के राज्य अधिकारियों के साथ एक बैठक का आयोजन करके राज्य में पशुपालन सेक्टर के सुदृढ़ीकरण और पशुपालकों की आय में अभिवृद्धि के उपायों पर सार्थक विचार–विनिमिम हुआ है। वेटरनरी विश्वविद्यालय पशुपालकों तक पशुपालन तकनीकों के हस्तांतरण और उन्नत पशुपालन के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय में पशुपालन की विभिन्न विधाओं में युवाओं, किसानों और पशुपालकों के लिए लघु अवधि के सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों का भी प्रावधान है। इनमें कुक्कुट उत्पादन और आहार संयोजन, ब्रायॅलर उत्पादन, कृत्रिम गर्भाधान तकनीक, जैविक पशुधन उत्पादन, डेयरी फॉर्म प्रबंधन, पशु आहार संयोजन, भेड़–बकरी उत्पादन, डेयरी उत्पादों में मूल्य संवर्द्धन और पशुओं का प्राथमिक उपचार, प्राथमिक स्वास्थ्य प्रबंधन के पाठ्यक्रम शामिल है। मेरा सभी किसान–पशुपालक भाइयों और बहनों से आग्रह है कि केन्द्र व राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं और वेटरनरी विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में शामिल होकर प्रसंस्करण और उद्यमिता विकास में अपनी दक्षता बढ़ाकर आय बढ़ाने के साथ–साथ रोजगार के अवसर भी सृजन कर सकते हैं।

(प्रो. {डॉ.} विष्णु शर्मा)

वेटरनरी विश्वविद्यालय का चतुर्थ दीक्षान्त समारोह 25 फरवरी, 2021

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

विश्वविद्यालय के चतुर्थ दीक्षान्त समारोह में उद्‌बोधन
पशुओं से गुणवत्ता पूर्ण उत्पाद प्राप्त करने के लिए अच्छा पोषण भी जरूरी : राज्यपाल कलराज मिश्र

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र जी ने कहा है कि पशुओं से गुणवत्तापूर्ण उत्पाद प्राप्त करने के लिए उन्हें अच्छा पोषण भी दिया जाए। उन्होंने कहा कि पशुधन संरक्षण के लिए समाज में जागरूकता लाने की आवश्यकता है। राज्यपाल श्री मिश्र राजभवन में राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर के चतुर्थ दीक्षांत समारोह में 25 फरवरी को ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पशुओं को परिवार के सदस्य के रूप में मानते हुए पशुपालन शुरूआत से ही हमारी संस्कृति का अंग रहा है। यहां तक कि देवी–देवताओं का वाहन पशु–पक्षियों को माना गया है तो इसके पीछे उद्देश्य यही है कि प्रकृति और उसमें रहने वाले जीवों के प्रति हिंसा नहीं की जाये। राज्यपाल श्री मिश्र ने कहा कि पशुपालन के उन्नत तरीकों, उन्नत पोषाहार की नवीनतम तकनीकों, पशु चिकित्सा से संबंधित आधुनिक ज्ञान–विज्ञान, पशुधन संरक्षण और चिकित्सा से जुड़े नये आयामों की सार्थकता तभी है जब इनका लाभ राज्य के अन्तिम छोर पर बैठे पशुपालकों को मिल सके। उन्होंने कहा कि पशु विज्ञान केन्द्रों को गांव–ढाणी तक किसानों और पशुपालकों को पशुपालन से जुड़ी नवीनतम जानकारी उनकी अपनी भाषा और समझ के अनुरूप उन तक पहुंचाने की पहल करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इससे पशुपालकों की समस्याओं के स्थानीय स्तर पर समाधान और अनुसंधान की नई दृष्टि विकसित होगी।

निदेशक अटारी डॉ. एस.के. सिंह ने कृषि विज्ञान केंद्र, नोहर का किया अवलोकन

कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी) जोन– 2 जोधपुर के निदेशक डॉ एस.के. सिंह ने 7 फरवरी को कृषि विज्ञान केंद्र, नोहर हनुमानगढ़–II के निर्माणाधीन प्रशासनिक भवन का अवलोकन किया। निदेशक डॉ एस.के. सिंह ने कहा की केंद्र किसानो के कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी तथा कृषि वैज्ञानिक तकनीकों को किसानों तक पहुंचाए जिससे उन्हें अधिक से अधिक लाभ हो। इस अवसर पर प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा ने केंद्र पर चल रही गतिविधियों और प्रगति के बारे में बताया। निदेशक अटारी डॉ. सिंह एवं निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. धूड़िया ने परलीका गांव के प्रगतिशील किसान लालसिंह बेनीवाल के फार्म का भ्रमण भी किया। वहां उन्होंने समन्वित खेती जिसमें फसल, सब्जियां, पशुपालन, अजोला, वर्मीकम्पोस्ट, ड्रिप सिंचाई पद्धति, बेर, निम्बू एवं अमरुद आदि के बाग का अवलोकन भी किया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में गलघोंटू रोग पर राज्य स्तरीय ई-पशुपालक चौपाल

पशुओं में गलघोंटू रोग पर ई–पशुपालक चौपाल 10 फरवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की गई। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार के पूर्व अनुसंधान निदेशक प्रो. रविन्द्र शर्मा ने पशुपालकों की इस गम्भीर रोग के बारे में जिज्ञासाओं का समाधान किया। प्रो. रविन्द्र शर्मा ने बताया कि गलघोंटू पशुओं में होने वाला एक संक्रामक घातक रोग है जिससे पशु असमय ही काल के ग्रास बन जाते है। इससे भैंसों में सर्वाधित प्रभावित होने से पशुपालकों को बड़ा आर्थिक नुकसान होता है। इस रोग के जीवाणु स्वस्थ पशु की मांस पेशियों में बने रहते हैं जो प्रतिकूल मौसम और रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने पर अपने संक्रमण का तेजी से प्रभाव छोड़ते हैं। विश्वविद्यालय के आधिकारिक फेसबुक पेज पर बड़ी संख्या में ई–चौपाल को राज्य के सैंकडों पशुपालकों ने सुना और देखा।

राजुवास के वैज्ञानिकों और नाबार्ड के जिला प्रबंधकों की बैठक में पशुपालन व ग्रामीण विकास पर हुई चर्चा

पशुपालन और ग्रामीण विकास विषय पर वेटरनरी विश्वविद्यालय में नाबार्ड के महाप्रबंधक सहित राज्य के जिला विकास प्रबंधकों के साथ राजुवास और केन्द्रीय अनुसंधान संस्थाओं के वैज्ञानिकों की संरचनात्मक बैठक और परिचर्चा 12 फरवरी को आयोजित की गई। विश्वविद्यालय के सामाजिक विकास एवं सहभागिता प्रकोष्ठ और नाबार्ड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित बैठक की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने की। बैठक में राज्य के पशुपालक और किसानों के हित में किए अनुसंधान और पशुपालन के सुदृढीकरण के लिए नाबार्ड योजनाओं से जोड़ने और उनकी आय में वृद्धि किए जाने के उपायों पर परिचर्चा की गई। नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक जयदीप श्रीवास्तव ने कहा कि कृषि के बदलते परिवेश में किसान और पशुपालकों की समृद्धि के लिए कृषि–पशुपालन के एकीकृत मॉडल की जरूरत है। नाबार्ड का उद्देश्य छोटे किसानों–युवाओं को खेती–बाड़ी के साथ–साथ पशुपालन कार्यों से जोड़ना है। परिचर्चा में राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. ए. साहू, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र के प्रभागाध्यक्ष डॉ. एस.सी. मेहता और केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, बीकानेर के प्रमुख डॉ. एच.के. नरूला ने ऊंट, भेड़ व घोड़े पर अनुसंधान कार्यों की उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। राजुवास के मानव संसाधन विकास निदेशक प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने अपने सुझाव दिए। आयोजन सचिव प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक ने पशुपालन और ग्रामीण विकास की संरचनात्मक बैठक के महत्व और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। परिचर्चा में नाबार्ड के महाप्रबंधक कुलदीप सिंह, महाप्रबंधक टी. वैंकट कृष्ण और उप महाप्रबंधक इन्दू राठौरिया ने भी विचार व्यक्त किए। नाबार्ड के जिला विकास प्रबंधक रमेश ताम्बिया ने सभी का आभार जताया। बैठक के दूसरे दिन नाबार्ड के 25 जिला प्रबंधकों ने वेटरनरी विश्वविद्यालय में डेयरी प्लांट, पोल्ट्री फॉर्म और क्लिनिक्ल कार्यों का अवलोकन करके राज्य के ग्रामीण विकास में देशी गौवंश उत्पाद, प्रसंस्करण व पोल्ट्री फार्मिंग से सुदृढीकरण की संभावनाओं को तलाशा।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलटी

जैविक पशुपालन पर पशुपालक प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा "उन्नत पशुपालन–जैविक पशुपालन" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 19–20 फरवरी को ग्राम जयमलसर में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव जयमलसर के 24 पशुपालक शामिल हुए। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान जैविक पशुपालन के महत्व, चारा उत्पादन, मुर्गी एवं बकरी पालन और स्वच्छ दुग्ध उत्पादन पर विषय विशेषज्ञ डॉ. रजनी जोशी, डॉ. दीपिका गोकलानी, डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. मनोहर सैन, डॉ. नीरज शर्मा, डॉ. अरूण कुमार झीरवाल, डॉ. अमित कुमार, डॉ. महेन्द्र तंवर और डॉ. मंगेश कुमार द्वारा जानकारी दी गयी। प्रशिक्षण के समापन पर सरपंच ग्राम पंचायत जयमलसर भंवरी देवी ने सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये।

गाढ़वाला व जयमलसर में स्वच्छता रैली व गोष्ठी

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलीटी के तहत गोद लिए गांव गाढ़वाला व जयमलसर में 23 व 27 फरवरी को स्वच्छता गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इस स्वच्छता गोष्ठी में वेटरनरी कॉलेज के विद्यार्थी एवं स्कूली बच्चों ने गांव में स्वच्छता रैली निकालकर ग्रामिणों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित गोष्ठी में विद्यार्थियों को स्वच्छता के महत्व पर व्याख्यान दिया। पशु जैव चिकित्सकिय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केन्द्र के सह–अन्वेषक डॉ. मनोहर सेन ने विभिन्न पशुजन्य संक्रामक रोगो के फैलने एवं इनसे बचाव के उपायों पर प्रकाश डाला।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 2, 9 एवं 16 फरवरी को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 23–24 एवं 26–27 फरवरी को दो दिवसीय आफॅलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 131 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 3, 5, 22 एवं 24 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 19–20 फरवरी को दो दिवसीय आफॅलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 137 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 9, 12, 16, 19 एवं 25 फरवरी को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 94 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 5, 10, 12, 17, 20 एवं 25 फरवरी को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 8–9 फरवरी को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 128 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3, 8, 12, 16, 20, 23 एवं 27 फरवरी को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 141 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 5, 11, 18, 22 एवं 25 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 143 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 9, 10, 12, 16, 19, 22 एवं 24 फरवरी को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 162 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 9, 12, 16, 19, 23 एवं 25 फरवरी को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 181 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र,बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौडगढ़) द्वारा 8, 12 एवं 19 फरवरी को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 9–10, 16–17 एवं 23–24 फरवरी को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 23 एवं 26 फरवरी को ऑनलाइन एक दिवसीय तथा 16–17 एवं 18–19 फरवरी को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 104 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, अजमेर

पशु विज्ञान केन्द्र, अजमेर द्वारा 2, 5, 9, 12, 20 एवं 25 फरवरी को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण शिविरों में 112 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनं द्वारा 8, 12, 15 एवं 19 फरवरी को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 83 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 4, 10, 12, 19 एवं 24 फरवरी को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 112 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 4, 9, 12, 17, 24 एवं 27 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 107 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 12 फरवरी को गांव रामगढ़ गांव में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर तथा 4–5 एवं 17–20 फरवरी को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 68 किसानों ने भाग लिया।

पशु आहार में विटामिन भी है जरूरी

सफल पशुपालन व्यवसाय में पशुओं के लिए सन्तुलित आहार का होना आवश्यक है। हर श्रेणी के पशुओं जैसे बोझा ढ़ोने वाले, दुग्ध उत्पादन करने वाले, जोतने वाले पशुओं को नियमित रूप से विटामिनों की उसके आहार में आवश्यकता होती है। विटामिन पशुओं के लिए अत्यन्त सूक्ष्म मात्रा में आवश्यक है। मोटे रूप से विटामिन ''ए'', ''बी समूह'', ''सी'', ''डी'' व ''ई'' जैसे नामों से जाने जाते है। विटामिन शरीर को स्वस्थ रखने, जीवन निर्वाह, वृद्वि एवं उत्पादन आदि सभी कार्यो के संचालन में आवश्यक योगदान करते है। विभिन्न विटामिन विभिन्न प्रकार के चारे–दानों से उपलब्ध हो सकते है।

विटामिन ए : इस विटामिन के सेवन से पशुओं में रोगों से बचने की शक्ति उत्पन्न होती है तथा आंखें, त्वचा और नाड़ी पद्धति भली प्रकार से कार्य करते हैं। इसकी कमी से श्वांस, मूत्र, जनन व पाचन तन्त्र में रोग उत्पन्न हो जाते है। स्वस्थ्य शरीर, हड्यिां तथा दांतों के निर्माण में भी इसकी विशेष आवश्यकता रहती है। गर्भावस्था एवं दुग्ध उत्पादन काल में इस विटामिन की आवश्यकता लगभग 15 गुना बढ़ जाती है। इस विटामिन की कमी के कारण पशुओं में गर्भपात, प्रसव उपरान्त जेर का रूक जाना, असामान्य एवं रोगी वत्स का जन्म लेना तथा दुधारू पशुओं में दूध और दुग्ध वसा की कमी हो जाती है। बछड़ों में इसकी कमी से अन्धापन उत्पन्न हो जाता है। हमारे देश में हरे चारे की कमी तथा चारागाह में केरोटिन की मात्रा में कमी के कारण पशुओं में ''विटामिनोसिस–ए'' नामक रोग उत्पन्न हो जाता है। पशुओं तथा कुक्कुटों में संश्लेषित व्यवसायिक विटामिन–ए नियमित रूप से देना चाहिए। पशुओं को हरा चारा देने से विटामिन ''ए'' की पूर्ति होती हैं।

विटामिन–बी कॉम्पलेक्स : जुगाली करने वाले पशुओं के रूमन में ''बी समूह'' के विटामिन तथा विटामिन–''सी'' और विटामिन ''के'' निर्मित होते है। अतः इनकी आवश्यकता उनके खुराक में नहीं होती है और न ही उनकी कमी वाले रोग ही उनमें उत्पन्न होते है। साधारण आमाशय वाले पशु जैसे सुअर व कुक्कुट आहार में ''बी समूह'' के विटामिनों का मौजूद होना आवश्यक होता है। यह विटामिन पशुओं के शरीर में जमा होते हैं, अतः आहार में इसका नियमित प्रयोग आवश्यक है। पशुओं की पाचन तथा चयापचय क्रिया, रक्त बनाने, भोजन उपयोग, मांस, अण्डा, दुग्ध उत्पादन में इसका विशेष योगदान है। इसकी कमी से पशुओं में पक्षाघात, मसूड़ों तथा होठों की सड़न, रूक–रूक कर अतिसार, खुरदरी त्वचा तथा प्रजनन सम्बन्धी बाधा उत्पन्न होती है। मुर्गियों में कर्ल्ड टो पेरालाइसिस, (मुड़े पंजे), पॉलीन्यूराइटिस, पंख गिरना, चोंच के चारों तरफ सड़न, शरीर वृद्धि का रूक जाना तथा अण्डों से कम बच्चे निकलना आदि उत्पन्न हो जाते है।

विटामिन–सी : विटामिन ''सी'' रक्त कोशिका के निर्माण में सहायक है। यह विटामिन अनेक ऑक्सीकरण प्रक्रियाओं में ''को–एंजाइम'' के रूप में कार्य करता है। यह एड्रीनल ग्रन्थि के सफल संचालन में महत्वपूर्ण है, जिसके फलस्वरूप पशु स्ट्रेस व शॉक आदि को सहन करता है। यह शरीर की रक्षा शक्ति बढ़ाने तथा सामान्य संक्रमण एवं टोक्सिन के विरूद्व प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण है।

विटामिन–डी : यह विटामिन शरीर में कैल्शियम तथा फॉस्फोरस के उचित उपयोग के लिए अति आवश्यक है। वृद्धि प्राप्त करते पशुओं तथा पक्षियों, गर्भावस्था धारण किये पशुओं तथा दुग्ध उत्पादन काल में विटामिन–डी की मात्रा की अधिक आवश्यकता होती है। इसकी कमी से रिकेट्स, शरीर की बनावट में गड़बड़ी तरूण पशुओं में होती है। वयस्क पशुओं में दुग्ध उत्पादन की मात्रा में कमी, कमजोर मांस पेशियां, प्रसूति ज्वर, ओसटियोमलेशिया तथा असामान्य गर्भाधान के लक्षण दिखाना आदि हो जाता है।

विटामिन–ई : इस विटामिन का मुख्य कार्य पशुओं में ऊतक आक्सीकरण गति को नियन्त्रित करना है। इसको हमेशा विटामिन–ए के साथ संयुक्त रूप से खिलाना चाहिए क्योंकि विटामिन–ई अपने आक्सीकरण विरोधी गुण के कारण विटामिन–ए के कार्यो को बढ़ाता है। प्रजनन सम्बन्धी कार्यो को सुचारू रूप से चलाने में इस विटामिन की विशेष भूमिका है। तरूण पशुओं में इसकी कमी से मांसपेशीय डिसट्रोफी उत्पन्न हो जाती है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

थारपारकर गाय : राजस्थान के लिए एक उपहार

थारपारकर राजस्थान में पाई जाने वाली दुधारू गाय की एक नस्ल है, इसको सफेद सिंधी, कच्छी और थारी नामों से भी जाना जाता है। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पूर्वी सेना के शिविरों के पास दूध की आपूर्ति के लिए इस नस्ल का उपयोग किया गया था। थारपारकर नस्ल का नाम राजस्थान के थार रेगिस्तान और थारपारकर क्षेत्र (सिंध–गुजरात) से लिया गया है, जो इसका मूल स्थान था। यह नस्ल राजस्थान के जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर जिलों में पाई जाती हैं। यह नस्ल गर्म जलवायु परिस्थितियों और चारे की कमी वाले आवासीय भू–भाग के लिए बहुत अच्छी तरह से अनुकूलित हैं।

थारपाकर नस्ल की दुग्ध उत्पादन क्षमताएं :

- सामान्य रूप से एक गाय प्रतिदिन 8–10 किलोग्राम और सालाना 3000–3500 किलोग्राम दूध देती है।
- उच्च पोषण वाली चारागाह भूमि की उपलब्धता की स्थिति में गायों का दुग्ध उत्पादन प्रति ब्यांत 3000 लीटर से अधिक हो जाता है।
- गायों में दूध उत्पादन और शुष्क दिनों की अवधि क्रमशः 330 और 114 होती है।
- पहली ब्यांत की उम्र 38 से 42 महीनें और अन्तःब्यांत की अवधि 430 से 460 दिनों तक की होती है।
- इन पशुओं के दूध में 5 प्रतिशत वसा होती है।

थारपाकर नस्ल के लक्षण :

- इस नस्ल के पशु सतर्क, मध्यम आहार के होते हैं।
- रंग सफेद और ग्रे के अलावा काले और लाल या संयोजन आमतौर पर होता है।
- थारपाकर नस्ल की गायों के सींग वीणा आकार वाले होते हैं। सींग (ऊपर और बाहर की ओर), मस्तक कुंद बिंदुओं के साथ अन्दर की ओर झुका हुआ होता है।
- कान कुछ लम्बे–चौड़े, अर्ध पेंडुलस और आगे की तरफ झुके होते है।
- बालों के साथ त्वचा का एक छोटा सा हिस्सा सींगों के आधार पर फैला होता है।
- त्वचा अक्सर लंबवत झूरियों वाली होती है।

अनुकूलन क्षमताएं : थारपाकर नस्ल विदेशी नस्लों की तुलना में अधिक गर्मी में अपने शरीर के तापमान को नियंत्रित करने में बेहत्तर होती हैं। थारी गायों को बहुत कठोर और कई उष्णकटिबंधीय रोगों के लिए प्रतिरोधी कहा जाता है।

- यह नस्ल दुग्ध उत्पादन पर गर्मी के कारण पड़ने वाले प्रभाव को झेलने में बेहत्तर हैं।
- गर्भ ठहरने की दर पर भी वातावरण के अधिकतम तापमान का प्रभाव कम होता है।
- इसका उद्भव और विकास इसी वातावरण में हुआ है, जिससे यह आनुवांशिक रूप से राजस्थान की जलवायु हेतु ज्यादा अनुकूलित है।

डॉ. निष्ठा यादव, डॉ. कंगबम बिधालक्ष्मी, डॉ. लखनपाल सिंह,
डॉ. अम्बिका चौधरी, डॉ. मंजू नेहरा,
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पक्षियों में बर्ड फ्लू को पहचानें

बर्ड फ्लू एक घातक विषाणु जनित संक्रामक रोग है, जो कि कुक्कुटशाला पक्षियों मे (मुर्गीयों), जंगली पक्षियों व प्रवासी पक्षियों में सामान्यतया पाया जाता है। इसके अलावा मनुष्य सहित ये कई अन्य स्तनधारी पशुओं में भी हो सकता है। यह रोग मुख्यतया श्वंसन प्रणाली को प्रभावित करता है। जंगली पक्षी व प्रवासी पक्षी इस रोग के प्रकोप व प्रसार में मुख्य भुमिका निभाते है। संक्रमित प्रवासी पक्षी व जंगली पक्षी लार, मल व शरीर के अन्य स्त्राव के द्वारा घरेलू व पालतू पक्षियों की खाद्य सामग्री को संदुषित कर देते है। यह रोग इनफ्लूएजा टाइप–ए विषाणु से होता है, जो कि एक खंडित आर.एन.ए जीनोम वाला विषाणु है। जैसे– एच$_5$एन$_8$, एच$_5$एन$_1$, एच$_5$एन$_7$, एच$_5$एच$_5$, एच$_7$एच$_9$ आदि। इन सभी उप प्रकारों में से एच$_5$एन$_8$ उप प्रकार अत्यधिक घातक व पक्षियों से मनुष्यों में प्रसारित होता है। यह रोग संक्रमित पक्षी की लार, मल (बीट), नाक स्त्राव से निष्कासित विषाणु से फैलता है। रोगी पक्षियों, सक्रंमित आहार, पानी, उपकरणों आदि के सम्पर्क में आने से स्वस्थ पक्षियों में फैलता है। संक्रमित पक्षी के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्पर्क से स्वस्थ पक्षियों में फैलता है। बर्ड फ्लू का पहला प्रकोप चीन में 1996 में रिपोर्ट किया गया था तब से लेकर अब तक इसका नियमित समय अंतराल में प्रकोप होता रहा है। हाल ही में भारत के 10 राज्यों में बर्ड फ्लू की पुष्टि की गई। केरला (कोटायाम, आलापूजा) में घरेलू बतकों में एच$_5$एन$_8$ की पुष्टि की गई। हिमाचल प्रदेश के प्रवासी पक्षियों में एच$_5$एन$_8$ उप प्रकार जो कि अत्यधिक घातक व जुनोटिक है, कि पुष्टि की गई।

रोग के लक्षणः संक्रमित पक्षियों में लक्षणों की शुरूआत अचानक होती है और पक्षी मरने लगते है (अत्यधिक मृत्यु दर), इस रोग में मुख्य लक्षण श्वंसन प्रणाली से सम्बन्धित होते है। रोगी पक्षी सुस्त होकर खाना पीना बंद कर देता है। संक्रमित पक्षी की चोंच व नासाछिद्र से चिपचिपा रक्तयुक्त स्त्राव निकलता है। पक्षियों को श्वांस लेने में कठिनाई होती है। कलंगी व लटकन पर सूजन एवं नीलापन आ जाता है, अण्डे उत्पादन में अत्यधिक कमी।

रोग का निदानः रोग के निदान हेतु संक्रमित पक्षी के मुंह, मलद्वार से नमूने (सैम्पल) लिए जाते है व रक्त के नमूने की भी जांच की जानी चाहिए। जहां पर विभिन्न परीक्षणों जैसे–हीमएग्लुटीनेशन टेस्ट, इम्यूनोडिफ्यूजन टेस्ट, फ्लोरेसेन्स एन्टीबॉडी टेस्ट, कोम्पलीमेंट फिक्सेशन टेस्ट तथा एलाइजा टेस्ट द्वारा विषाणु की पुष्टि की जानी चाहिए।

रोग का उपचार : यह एक विषाणु जनित रोग है, अतः इसका कोई विशिष्ट उपचार नही है। फिर भी पक्षियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने हेतु विटामिन्स (विटामीन–ई, विटामीन–सी) व मिनरल्स युक्त पौष्टिक आहार प्रदान किया जाना चाहिए। हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन (वर्ल्ड हेल्थ ओरगेनाइजेशन) ने एंटीवायरल ड्रग जैसे –ओसलटा मीवीर व जेना मीवीर दवाईयों को इस रोग के उपचार में प्रभावी बताया है।

रोग का पब्लिक हेल्थ महत्व : पब्लिक हेल्थ की दृष्टि से यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण रोग है, क्योंकि इस विषाणु का एच$_5$एन उप प्रकार जूनोटिक अर्थात संक्रमित पक्षियों के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सम्पर्क से यह मनुष्यों में फैल सकता है व संक्रमित मनुष्यों में बर्ड फ्लू के लक्षण आ जाते है जैसे– बुखार, गले में दर्द, कफ, खांसी व श्वांस लेने में कठिनाई, सिर दर्द व पेशियों में दर्द इत्यादि। अतः रोग की घातकता के बारे में आमजन व मुर्गीपालकों में जागरूकता अत्यधिक आवश्यक है।

रोग का निवारण व नियंत्रण : कुक्कटशाला में स्वच्छता एवं कीटाणुनाशक दवाओं का छिड़काव करें, प्रकोप की पुष्टि होने पर सभी संक्रमित पक्षियों को स्वस्थ पक्षियों से अलग कर उपचार करें। मृत पक्षियों के निपटान हेतु उन्हें भस्मक विधि से जला दें या कहीं दूर जगह पर गहरे गड्डे में कास्टिक चूने के साथ दफना देवें। रोग के लक्षणों की सही पहचान होने पर तुरन्त नजदीकी पशु चिकित्सालय में सम्पर्क करें। रोगी पक्षियों के अण्डे, मल, पंख आदि को जलाकर नष्ट कर दें।

- ❖ कुक्कुट शाला में बायोसेक्यूरिटी उपायों को दृढ़/प्रबल करें।
- ❖ जंगली व प्रवासी पक्षीयों के प्रवेश को कुक्कुटशाला में रोके।
- ❖ कुक्कुटशाला में कामगार, पी.पी.ई. किट, फेसमास्क, ग्लब्स, गम्बूटस का उपयोग करें।

डॉ. रजनी जोशी
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुपालन नए आयाम
फार्म–4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	: बीकानेर (राज.)
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	प्रकाशक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर
4.	मुद्रक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
5.	संपादक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: लागू नहीं

मैं प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 01–3–2021 **(प्रो. {डॉ.} राजेश कुमार धूड़िया)**
प्रकाशक के हस्ताक्षर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मार्च, 2021

पशु रोग	पशु प्रकार	प्रभावित जिले			
		अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम सम्भावना	बहुत कम संभावना
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, भीलवाड़ा, दौसा
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सीकर, उदयपुर	–	–	–
खुरपका, मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	सीकर, जयपुर, भरतपुर	अलवर, चूरू, नागौर	–	अजमेर, बांसवाड़ा, बारा, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, जैसलमेर, झालावाड़, झुंझुनूं, जोधपुर, करौली, कोटा, पाली, प्रतापगढ़, राजसमंद, सवाईमाधोपुर, टोंक, उदयपुर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	अलवर, दौसा, हनुमानगढ़, जयपुर	–	–	बारां, बाड़मेर, भरतपुर, चूरू, धौलपुर, झालावाड़, झुंझुनूं, जोधपुर, नागौर, सीकर, टोंक
पी.पी.आर	बकरी	बारां, जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर	–	नागौर	अजमेर, अलवर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, भीलवाड़ा, चूरू, दौसा, झालावाड़, झुंझुनूं, करोली, पाली, प्रतापगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, उदयपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के.सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं0 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

डेयरी व्यवसाय को अपनाकर लाभान्वित हुए सुशील

पशुपालन एवं खेती राजस्थान के किसानों की आय का मुख्य स्त्रोत रहा है। वर्तमान में जहां बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है तथा वर्षा की अनिश्चितता किसानों के लिए एक पहेली बनी हुई है, ऐसे में पशुपालन व्यवसाय में स्वरोजगार के अवसर युवाओं के लिए अपार सम्भावनाएँ लिए हुए हैं। सुशील ने डेयरी को अपनी आय का मुख्य स्त्रोत बनाकर सफल हुए और नवयुवकों के लिए एक मिशाल कायम की है। सुशील ने पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में भाग लिया और पशुपालन को वैज्ञानिक तरीके से करने की ठान ली। सुशील ने केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविर डिवर्मिंग, टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवाओं के महत्व, चारा प्रबंधन, संतुलित पशु आहार, कृत्रिम गर्भाधान, पशु आहार में खनिज लवण मिश्रण का महत्व इत्यादि विषयों पर जानकारी प्राप्त की। उन्होनें पशुपालन में नवीनतम तकनीक के अन्तर्गत अजोला इकाई स्थापित कर पशुओं के आहार के लिए पौष्टिक एवं प्रोटीन युक्त हरा चारा प्राप्त किया। केन्द्र की मदद से अजोला इकाई पर आत्मा योजनान्तर्गत मिलने वाली सब्सीडी भी प्राप्त की, साथ ही उन्होनें केन्द्र से जानकारी प्राप्त कर नस्ल सुधार हेतु पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोड़मदेसर से साहीवाल नस्ल का विशुद्ध नर खरीदा। वर्तमान में सुशील के पास साहीवाल व राठी नस्ल की 21 गाय और दो मुर्रा भैंस है, जिससे 150 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन करते है इस व्यवसाय से इनकी वार्षिक आय लगभग 6–7 लाख रू तक हो जाती है। सुशील एक जागरूक पशुपालक के रूप में वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। सम्पर्क – **सुशील विश्नोई,** फुलदेसर–लूनकरणसर (मो. 7742232929)

निदेशक की कलम से...

बैकयार्ड मुर्गीपालन दे सकता है अतिरिक्त आय

हमारे देश में मुर्गीपालन कई हजारों वर्ष पुराना है। मुर्गियों की तेजी से वृद्धि, अधिक अण्डें व मांस उत्पादन के लिए चयनात्मक प्रजनन कई सौ सालों पूर्व शुरू हुआ। वर्ष 2019 में हुई 20वीं पशुगणना में देश में कुल 851.81 मिलियन पोल्ट्री है। इसमें गत पशुगणना से 16.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। इसमें से बैकयार्ड पोल्ट्री की संख्या 317.07 मिलियन है। देश में गत पशुगणना के मुकाबले इसमें 46 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। व्यावसायिक पोल्ट्री 534.74 मिलियन दर्ज की गई है जिसमें पूर्व से 4.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। बैकयार्ड पोल्ट्री बेरोजगार युवाओं के साथ–साथ किसानों और पशुपालकों के लिए कम लागत में एक नियमित आय का जरिया है। यही कारण है कि इसमें असाधारण वृद्धि दर्ज की गई है। यद्यपि कुछ पक्षी छोटे समूहों में खुले में पाले जाते है किन्तु बाजार में उपलब्ध अधिकांश पक्षी संघनित व्यावसायिक उद्यमीकरण का परिणाम है। मुर्गीपालन में अद्वितीय जैव विविधता पाई जाती है। हमारी खाद्य सुरक्षा को देखते हुए इन अद्वितीय पक्षियों का संरक्षण और विकास भी आवश्यक है। हमारे यहां कड़कनाथ, असिल मेवाड़ी, नेक्टुनेक और प्रतापधन जैसी देशी नस्लें उपलब्ध हैं। देशी नस्लें स्थानीय जलवायु के सर्वथा अनुकूल होने के कारण उच्च रोग प्रतिरोधक क्षमता वाली होती हैं। इनका उत्पादन भी अन्य नस्लों से बेहत्तर है। अतः देशी मुर्गीपालन अधिक लाभकारी है। यदि हमारे किसान और पशुपालक भाई बैकयार्ड मुर्गीपालन को अपनाते हैं तो एक नियमित आय प्राप्त की जा सकती है। घर के पिछवाड़े भी 25–50 मुर्गियों का पालन करना आसान है। देशी अंडों और ब्रायॅलर के लिए स्थानीय स्तर पर ही बाजार उपलब्ध हो जाता है। दाना–पानी भी बिना किसी अतिरिक्त लागत के लिए हमारे खेतों में उपलब्ध हो जाता है अतः उनका पोषण भी आसानी से किया जा सकता है, अतः बैकयार्ड मुर्गीपालन एक नफे का व्यवसाय है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

RAJUVAS
e-पशुपालक चौपाल
माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को
समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक
राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण
LIVE https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया